International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.in
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 44-47

रीवा जिले के रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड में हाई स्कूल में अध्ययनरत बालिकाओं में संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा शिक्षा के प्रति चेतना जागृत का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ0 मनोरमा सिंह

एम0ए0 एवं पी–एच0डी0 (इतिहास), प्राचार्य, पं0 आर0एस0एस0 शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, पहड़िया, जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले के रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड में हाई स्कूल विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं में शिक्षा के प्रति संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा जागृति के बारे में अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में उनकी इसी दशा का विशेष रूप से वर्णन किया गया है, ताकि संचार साधनों के प्रचार–प्रसार से बालिकाओं को शिक्षा के प्रति जागरुक किया जा सके।

मूल शब्दः हाई स्कूल, बालिका, संचार साधन, प्रचार–प्रसार एवं चेतना जागृत।

प्रस्तावना

वेदों में नारी की शिक्षा, शील, गुण, कर्तव्य और अधिकारों का विषद् वर्णन है। इस प्रकार का वर्णन संभवतः संसार के किसी भी धर्मग्रंथ में नहीं है। चारों वेदों में सैकड़ों नारी विषयक मंत्र दिए गए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में नारी का समाज में विशेष स्थान था तथा पुरुषों की भाँति उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में बराबर का स्थान प्राप्त था। वैदिक साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि भारतवर्ष के समाज में नारियों को बहुत गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था। स्त्रियों की शिक्षा–दीक्षा की उत्तम व्यवस्था थी। स्त्रियाँ राजनीतिक, सामाजिक तथा प्रशासनात्मक कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं।

संसार प्रगतिशील है, अतः स्त्रियों के कार्यक्षेत्र में भी प्रगतिशीलता है। अब वह समय नहीं रहा, जबकि स्त्रियों को घर की चारदीवारी में बन्द रखा जाए। इस सम्बन्ध में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948–49) ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए हैं–

''घर की देखभाल करना स्त्रियों का मुख्य कार्य है और आगे भी रहेगा। फिर भी उनका सम्बन्ध सीमित नहीं रहना चाहिए। विभिन्न परिस्थितियों के कारण उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने की आवश्यकता हो सकती है। स्त्रियों को भी समान अवसर मिलने चाहिए। स्त्री को सामाजिक बंधनों से मुक्त होकर अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए स्वयं निश्चय करने का अवसर मिलना चाहिए। कभी–कभी विवाह से पूर्व स्त्रियाँ अध्यापन और नर्सिंग का अच्छा कार्य का सकती हैं। कभी–कभी उन्हें पति की मृत्यु हो जाने की दशा में भी परिवार–पालन के लिए कार्य करना होता है। जब बच्चे बड़े जाते हैं तो उन्हें 10 से 25 वर्ष तक व्यस्त जीवन व्यतीत करना होता है। उस समय भी वह अच्छा कार्य कर सकती हैं। कभी–कभी पति–पत्नी दोनों ही एक समान पेशे में कार्य करते हैं। कभी–कभी पुरुषों की भांति स्त्रियों को भी घर और परिवार से बाहर रुचिपूर्ण कार्य करने का समय मिल जाता है। इन सब कारणों से उन्हें शिक्षा की सुविधाएँ उपलब्ध होनी चाहिए।''

भारतीय जीवन को विकसित बनाने के लिए स्त्री–पुरुष दोनों को ही विभिन्न प्रकार के कार्यों हेतु शिक्षा की आवश्यकता है। यदि थोड़े से कार्यों को मान्यता दी जाए तो प्रतियोगिता बढ़ जाएगी और विभिन्न प्रकार की योग्यताओं को प्रकट करने का अवसर नहीं मिलेगा और इस प्रकार विभिन्न आवश्यकताएँ पूर्ण नहीं होंगी। एक प्रभावी समाज में विभिन्न प्रकार के पेषे उपलब्ध होंगे। शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य स्त्री–पुरुषों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूर्ण करना है।

स्वामी दयानन्द जी ने जोरदार शब्दों में कहा था कि राष्ट्र, समाज, प्रशासन तथा परिवार के क्रिया–कलाप तब तक उचित ढंग से नहीं किए जा सकते, जब तक स्त्रियों को शिक्षा न मिले।

गाँधी जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि स्त्रियों को वही शैक्षिक सुविधाएँ दी जाएँ जो पुरुषों के लिए हों। यदि हो सके तो उन्हें विशेष सुविधाएँ मिलनी चाहिए।

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा प्रत्येक पीढ़ी के साथ समाज की प्राचीन निधि का संरक्षण, संवर्धन एवं हस्तान्तरण होता रहता है। यदि शिक्षा न होती तो 'समाज' का जन्म ही न होता। सामाजिक जीवन का प्रवाह शिक्षा के कारण ही गतिशील होकर विकास की ओर अग्रसर होता है। किसी देश का विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है। देश की भौतिक सम्पन्नता, बौद्धिक श्रेष्ठता, संस्कारिकता, मानवीय रूचि की परिष्कृतता, सदगुण सदाचार, जीवन मूल्य आदि सभी मूल आधार उस देश की शिक्षा पर ही निर्भर है।

व्यक्ति समाजीकरण की प्रक्रिया के दौरान ही इन सामाजिक मूल्यों को सीखता है और उसे अपने व्यक्तिगत जीवन में आत्मसात करता है। इस संदर्भ में डॉ. मुकर्जी ने लिखा है कि "मनुष्य को मूल्य अपने जीवन से, अपने पर्यावरण से, अपने आप से, समाज और संस्कृति से ही नहीं अपितु मानस–अस्तित्व एवं अनुभव से प्राप्त होते हैं।"[1] अतः स्पष्ट है कि मानवीय व्यवहार में सामाजिक मूल्य सभी समाजों, में पायी जाती है। जो कि सर्वभौम है, गतिशील एवं परिवर्तित तथ्य है जो कि परिस्थिति जन्य परिवर्तित होते रहते हैं। मूल्य सामाजिक मानक होते हैं जिसके आधार पर विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों तथा विषयों का मूल्यांकन किया जाता है। समाज में सामाजिक मूल्य में उद्वेग, विभिन्नता एवं सांस्कृतिक एकता एवं स्थायित्व के गुण पाये जाते हैं। जो भारतीय समाज में निवासरत मानवीय व्यवहारों को नियंत्रित करने एवं सफल संचालन में मददगार होती हैं।

शिक्षा के द्वारा मनुष्य अपनी सभ्यता एवं संस्कृति में निरन्तर विकास करता है। इस विकास के लिए उसकी एक पीढ़ी अपने ज्ञान एवं कला–कौशल आदि को दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करती है। इस हस्तान्तरण के लिए प्रत्येक समाज विद्यालयी शिक्षा का नियोजन करता है। इसीलिए समय विशेष की विद्यालयी शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या और शिक्षण विधियाँ सब निश्चित प्रायः होते है। परन्तु जैसे–जैसे

[1] समाज शास्त्र भाग – 3 पृष्ठ क्र. 172 म.प्र. हिन्दी ग्रेथ अकादमी।

समाज में परिवर्तन होते है तैसे–तैसे शिक्षा उन परिवर्तनों को स्वीकार करती हुई आगे बढ़ती है। इस प्रकार उसके उद्देश्य, पाठ्यचर्या और शिक्षण विधियों आदि में आवश्यकतानुसार परिवर्तन होता रहता है।
हाई स्कूल में अध्ययनरत् किशोरवय बालिकाओं का व्यक्तित्व निर्माण प्रक्रिया के संवेदनशील दौर में होती है। उनका शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक विकास उन्हें रोमांच एवं नवीनता का आभास दिलाता है। मानसिक एवं शारीरिक क्षमता में उत्तरोत्तर वृद्धि भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए आत्मबल प्रदान करती है। ऐसी अवस्था में अध्यापकों, अभिभावकों एवं नीति निर्धारकों का अपेक्षाकृत अधिक जिम्मेदारी का परिचय देना होता है, जिसका वर्तमान परिस्थितियों में सर्वथा अभाव है, और जिले के सामने किशोरवय बालिकाओं के शैक्षिक अभिरूचि को सजाने, संवारने एवं परिपक्व बनाने के पश्चात् सकारात्मक परिणाम को प्राप्त करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

शोध समस्या एवं स्पष्टीकरण :
विभिन्न क्षेत्रों में समस्यायें विद्यमान है। शैक्षिक क्षेत्र में भी शोध कार्य हेतु विभिन्न स्तरों पर अनेकों प्रकार की शैक्षिक समस्यायें विद्यमान है। मानव समाज के विभिन्न वर्गो में शिक्षा की स्थिति एवं स्तर में विभिन्नता देखी जा सकती है। इस ओर शासकीय एवं अशासकीय स्तर पर संचार साधनों के प्रचार–प्रसार से निदान के प्रयास भी किये जा रहे है, लेकिन समाज के दलित, शोषित, पिछड़े, उत्पीड़न व विपन्न वर्ग अभी भी शैक्षिक विकास से कोसों दूर है। वर्तमान समय में भी आदिवासी क्षेत्र के बालिकाओं की शिक्षा के क्षेत्र में सहभागिता संतोषप्रद नहीं है, जबकि उच्च एवं अन्य सम्पन्न वर्ग अपेक्षाकृत अधिक लाभान्वित हुआ है। इसलिए इसका अध्ययन शीर्षक के अन्तर्गत शोध के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रतीत होता है।

शोध समस्या में प्रयुक्त शब्दावली का परिभाषीकरण :
1. **रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड –** रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड रीवा जिले के उत्तर पूर्वी छोर पर 24°23′ से 81°41′ पूर्वी देषांतर के बीच स्थित है। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 628.1 वर्ग किलोमीटर है।
2. **बालिकाएँ –** इससे तात्पर्य कक्षा 9 व 10 में अध्ययनरत बालिकाओं से हैं।
3. **संचार साधनों के प्रचार–प्रसार –** समाचार पत्र, इंटरनेट, टी.व्ही, कम्प्यूटर।
4. **हाई स्कूल –** मध्यप्रदेश शासन द्वारा संचालित कक्षा 9 से 10 तक।
5. **शैक्षिक विकास –** शैक्षिक विकास से तात्पर्य है हाई स्कूल स्तर पर बालिकाओं से उनके शैक्षिक विकास के विभिन्न पक्षों के प्रति जानकारी प्राप्त करना।
6. **समीक्षात्मक अध्ययन –** शोध के अन्तर्गत न्यादर्श हेतु चयनित विद्यालयों में अध्ययनरत हाई स्कूल स्तर पर बालिकाओं में संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा शैक्षिक विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन का उद्देष्य
1. 21वीं सदीं के विकसित भारत के निर्माण में किशोरियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना तथा भविष्य के प्रति जागरूक बनाना।
2. रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड में बालिकाओं की शैक्षिक विकास का पता लगाना।
3. विकासखण्ड में बालिकाओं की शिक्षा के विकास में आने वाले अवरोधों व समस्याओं का पता लगाना।
4. शिक्षा एवं संचार के नवीन माध्यमों जैसे– दृष्य उपकरणों, अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं इत्यादि के प्रबंध की महती आवश्यकता पर बल देना।
5. किशोरियों की उम्र, पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का शैक्षिक रूचि से सामंजस्य ज्ञात करना।

शोध अध्ययन की आवष्यकता एवं महत्व :
शोध अध्ययन के माध्यम से शोधार्थी बालिकाओं में सामाजिक परिवर्तन, व्यावसायिक मार्गदर्शन एवं समुचित शैक्षिक विकास एवं परिवर्धन करना चाहती है। शोध कार्य के अन्तर्गत जिन महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है वह निम्नांकित हैं–
1. शोध क्षेत्र के ग्रामीण अंचलों में निवास कर रही बालिकाओं की हाई स्कूल स्तर पर शिक्षा के विकास में शासन द्वारा चलायी जा रही प्रोत्साहन योजनाओं का क्या प्रभाव पड़ रहा है तथा संचालित योजनाओं की यथार्थ स्थिति क्या है।
2. बालिकाओं की सामाजिक व धार्मिक मान्यताओं, परम्पराओं, रूढ़ियों का पता लगाकर हाई स्कूल स्तर पर शिक्षा के प्रति बालिकाओं को प्रोत्साहित करना।
3. बालिकाओं के कक्षा शिक्षण को और अधिक प्रभावी बनाने हेतु संचार के प्रचार–प्रसार और अधिक आवश्यकता है।

शोध परिकल्पना
मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक अनुसंधान का प्रारंभ जब होता है, जबकि एक समस्या हो। समस्या की अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण साधन परिकल्पना है। शैक्षिक अनुसंधान में समस्या चयन के बाद परिकल्पनाओं की रचना शोध प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है। परिकल्पना से समस्या समाधान को उचित दिशा निर्धारित होती हैं परिकल्पनाओं द्वारा अनुसंधानकर्ता को तर्क संगत आंकड़ों के संकलन में ठीक दिशा मिलती है। भौतिक विज्ञानों में एक ही परिकल्पना को लेकर उसका परीक्षण करते हैं, किन्तु शैक्षिक अनुसंधान में अनेक परिकल्पनायें लेते हैं और प्रत्येक की सत्यता का परीक्षण करते हैं। अतः परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रकृति पर निर्भर है। प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्नानुसार हैं:–

"बालिकाओं में संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा शिक्षा के प्रति चेतना जागृत हुई है।"
अध्ययन का परिसीमन : प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिले के रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड की परिसीमा तक सीमित हैं।
न्यादर्ष चयन : अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है जो निम्नानुसार है–

सारणी क्रमांक 1: न्यादर्श चयन

क्र.	जनशिक्षा केन्द्र	विद्यालय संख्या	षिक्षक संख्या	प्राचार्य	अभिभावक संख्या	छात्र संख्या
1.	शास. बालक एच.एस.एस. रायपुर कर्चु.	2	8	2	10	100
2.	शास.एच.एस.एस. रौरा	2	8	2	10	100
3.	शास.एच.एस.एस. बुढ़िया	2	8	2	10	100
योग		6	24	6	30	300

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है विकासखण्ड के तीन जनशिक्षा केन्द्रों से 2–2 विद्यालय कुल 6 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन पद्धति द्वारा अध्ययन हेतु किया गया। शोध कार्य के उद्देष्यों की प्राप्ति हेतु गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 4–4 शिक्षक कुल 24 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य, 5–5 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 25 बालक व 25 बालिका, कुल 300 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है।

शोध विधि

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन के विधिवत सम्पादन के लिए निम्न शोध विधियों का चयन किया गया है–

1. **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
2. **साक्षात्कार विधि :** शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।
3. **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियाँ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., Chisquare test, 'T' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

शोध उपकरण

शोधार्थी द्वारा निम्न शोध उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

1. प्राचार्य साक्षात्कार अनुसूची
2. शिक्षक प्रश्नावली पत्रक
3. अभिभावक साक्षात्कार अनुसूची
4. छात्र प्रश्नावली पत्रक

शोध क्षेत्र का परिचय

रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड रीवा जिले के हृदय स्थली पर स्थित अपने अतीत के गौरवशाली इतिहास को संजोये हुए है। इसने शिक्षा, न्याय, सुरक्षा एवं राष्ट्रीय विकास मे अपनी अहम् भूमिका का निर्वहन किया है। रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड रीवा जिले के 9 विकासखण्डों मे से एक है जो कि जिला मुख्यालय से लगभग 9 किलोमीटर दूर से प्रारंभ हो जाता है। इसका मुख्यालय राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 7 पर रीवा नगर से 15 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड रीवा जिले के उत्तर पूर्वी छोर पर $24^{o}23'$ से $81^{0}41'$ पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 628.1 वर्ग किलोमीटर है।

रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड की स्थापना 01 अप्रैल सन् 1962 को हुई। इस विकासखण्ड को सामान्य श्रेणी का दर्जा दिया गया। रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड जिसके उत्तर मे गंगेव विकासखण्ड, दक्षिण मे जिला सीधी व पश्चिम मे रीवा विकासखण्ड स्थित है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, जो निम्नानुसार है–

सारणी क्रमांक 2: बालिकाओं में संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा शिक्षा के प्रति चेतना जागृत हुई है का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित	न्यादर्श में चयनित संख्या	जागृत है		जागृत नही है	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राचार्य	6	04	83.33	01	16.67
2.	शिक्षक	24	18	75.00	06	25.00
3.	अभिभावक	30	21	70.00	07	30.00
4.	छात्र	300	198	66.00	102	34.00
योग		**360**	**241**	**66.94**	**116**	**32.22**

स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के 83.33 प्रतिशत प्राचार्य, 75.00 प्रतिशत शिक्षक, 70.00 प्रतिशत अभिभावक व 66.00 प्रतिशत छात्र यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र के बालिकाओं में संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा शिक्षा के प्रति चेतना जागृत हुई है और शोध क्षेत्र के 30.00 प्रतिशत अभिभावक व 34.00 प्रतिशत छात्र, 25.00 प्रतिशत शिक्षक व 16.67 प्रतिशत प्राचार्य यह मानते हैं, कि बालिकाओं में संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा शिक्षा के प्रति चेतना जागृत नही हुई है।

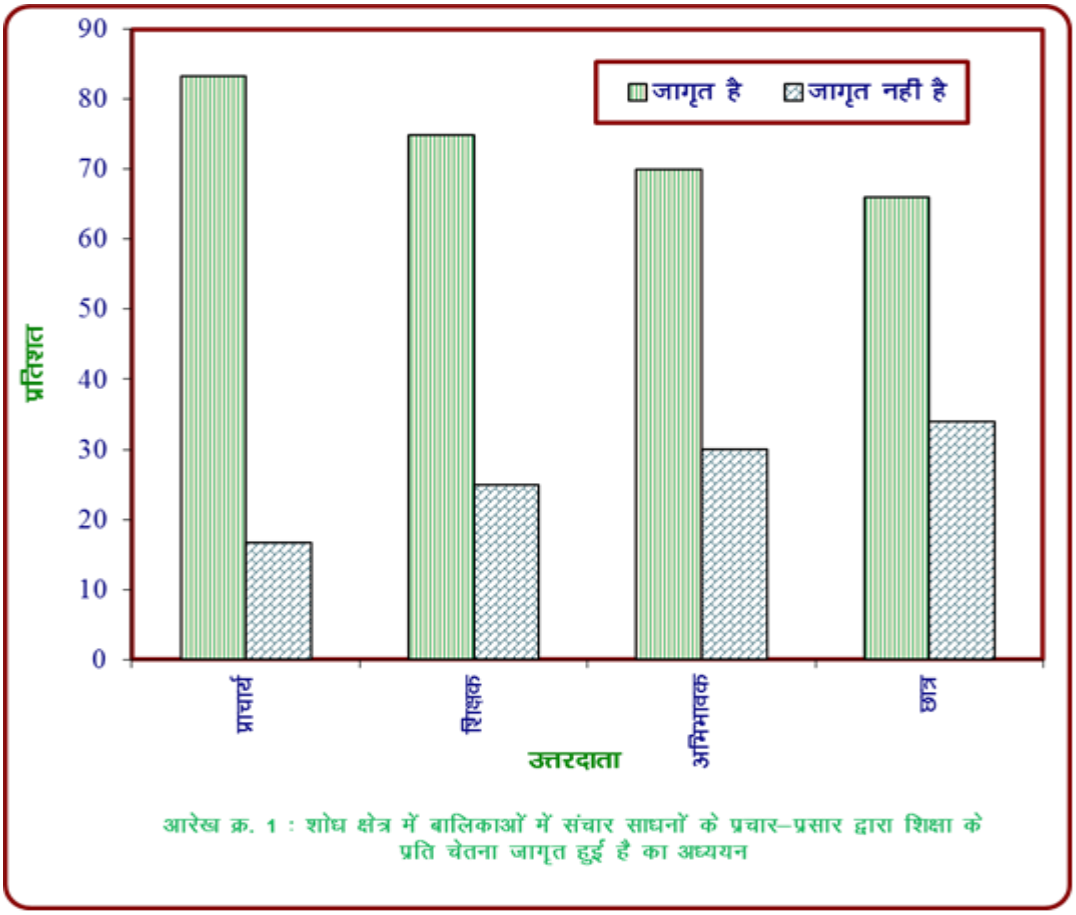

आरेख क्र. 1 : शोध क्षेत्र में बालिकाओं में संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा शिक्षा के प्रति चेतना जागृत हुई है का अध्ययन

सांख्यिकीय विष्लेषण

सारणी क्रमांक 2: काई वर्ग की गणना

आवृत्ति	जागृत है	जागृत नही है
F_o	66.94	32.22
F_e	49.58	49.58
F_o-F_e	17.36	-17.36
$(F_o$-$F_e)^2$	301.37	301.37
$\frac{(F_0 - F_e)^2}{F_e}$	6.08	6.08

$$x^2 = \sum \frac{(F_0 - F_e)^2}{F_e}$$

$x^2 = 12.16$

विष्लेषण एवं व्याख्या

शोध क्षेत्र के बालिकाओं में संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा शिक्षा के प्रति चेतना जागृत हुई है की स्थिति ज्ञात करने के लिए प्राप्त आंकड़ों को काई वर्ग द्वारा विश्लेषित किया गया। गणना द्वारा x^2 का मान 12.16 है, जबकि तालिकामान 1df पर तथा 0.05 व 0.01 level पर 3.84 व 6.63 है। गणना मान अधिक होने के कारण सार्थक है कि बालिकाओं में संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा शिक्षा के प्रति चेतना जागृत हुई है अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि रीवा जिले के रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड में बालिकाओं में संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा शिक्षा के प्रति चेतना जागृत हुई है।

संदर्भ

1. Acharya, Ramamurti Report of the committee for review of national policy on education 1986 Govt. of India New Delhi. 1992,
2. Rao DP. Status of primary education among schedule tribes in Andhra Pradesh. Gyan: The Journal of Education, 2005; 1(2):12-20.
3. Naidu TS. Tribal Education in South India-Problems of dropout children and future prespectives: Journal of Educational Research and Education. 2000; 39(2):36-46.
4. Pradhan, Nityananda Education of out of school Tribal Girls. The Primary Teacher, 2004; XXIX(3-4):57-68.
5. अग्निहोत्री, गुरू रामप्यारे (1990), रीवा राज्य का इतिहास, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, म.प्र. भोपाल.
6. शर्मा, राजकुमारी, श्रीवास्तव एस.बी.एन., दुबे, एस.के. (2007)–भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें। राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
7. बेहार, शरद (1983)– मध्यप्रदेश का शैक्षिक इतिहास पृ. 46. (पलास, शिक्षा विशेषांक)
8. पाठक, पी.डी. (2007) शिक्षा मनोविज्ञान, छत्तीसवां संस्करण विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
9. गुप्ता, एस.पी. (1997) : सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवना, इलाहाबाद.
10. कौल, लोकेश (1998) : शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि. नई दिल्ली.
11. कुमार प्रमिला (2003)–मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन, चौदहवां संस्करण, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल।